يَـٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ ٱتَّقُوا۟ رَبَّكُمُ ٱلَّذِى خَلَقَكُم مِّن نَّفْسٍ
وَٰحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيرًا وَنِسَآءً ۚ
وَٱتَّقُوا۟ ٱللَّهَ ٱلَّذِى تَسَآءَلُونَ بِهِۦ وَٱلْأَرْحَامَ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ كَانَ
عَلَيْكُمْ رَقِيبًا ﴿١﴾ وَءَاتُوا۟ ٱلْيَتَـٰمَىٰٓ أَمْوَٰلَهُمْ ۖ وَلَا تَتَبَدَّلُوا۟
ٱلْخَبِيثَ بِٱلطَّيِّبِ ۖ وَلَا تَأْكُلُوٓا۟ أَمْوَٰلَهُمْ إِلَىٰٓ أَمْوَٰلِكُمْ ۚ إِنَّهُۥ
كَانَ حُوبًا كَبِيرًا ﴿٢﴾ وَإِنْ خِفْتُمْ أَلَّا تُقْسِطُوا۟ فِى ٱلْيَتَـٰمَىٰ
فَٱنكِحُوا۟ مَا طَابَ لَكُم مِّنَ ٱلنِّسَآءِ مَثْنَىٰ وَثُلَـٰثَ وَرُبَـٰعَ ۖ
فَإِنْ خِفْتُمْ أَلَّا تَعْدِلُوا۟ فَوَٰحِدَةً أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَـٰنُكُمْ ۚ
ذَٰلِكَ أَدْنَىٰٓ أَلَّا تَعُولُوا۟ ﴿٣﴾ وَءَاتُوا۟ ٱلنِّسَآءَ صَدُقَـٰتِهِنَّ نِحْلَةً ۚ فَإِن
طِبْنَ لَكُمْ عَن شَىْءٍ مِّنْهُ نَفْسًا فَكُلُوهُ هَنِيٓـًٔا مَّرِيٓـًٔا ﴿٤﴾ وَلَا
تُؤْتُوا۟ ٱلسُّفَهَآءَ أَمْوَٰلَكُمُ ٱلَّتِى جَعَلَ ٱللَّهُ لَكُمْ قِيَـٰمًا
وَٱرْزُقُوهُمْ فِيهَا وَٱكْسُوهُمْ وَقُولُوا۟ لَهُمْ قَوْلًا مَّعْرُوفًا ﴿٥﴾
وَٱبْتَلُوا۟ ٱلْيَتَـٰمَىٰ حَتَّىٰٓ إِذَا بَلَغُوا۟ ٱلنِّكَاحَ فَإِنْ ءَانَسْتُم مِّنْهُمْ
رُشْدًا فَٱدْفَعُوٓا۟ إِلَيْهِمْ أَمْوَٰلَهُمْ ۖ وَلَا تَأْكُلُوهَآ إِسْرَافًا وَبِدَارًا
أَن يَكْبَرُوا۟ ۚ وَمَن كَانَ غَنِيًّا فَلْيَسْتَعْفِفْ ۖ وَمَن كَانَ فَقِيرًا
فَلْيَأْكُلْ بِٱلْمَعْرُوفِ ۚ فَإِذَا دَفَعْتُمْ إِلَيْهِمْ أَمْوَٰلَهُمْ فَأَشْهِدُوا۟
عَلَيْهِمْ ۚ وَكَفَىٰ بِٱللَّهِ حَسِيبًا ﴿٦﴾ لِّلرِّجَالِ نَصِيبٌ مِّمَّا تَرَكَ
ٱلْوَٰلِدَانِ وَٱلْأَقْرَبُونَ وَلِلنِّسَآءِ نَصِيبٌ مِّمَّا تَرَكَ ٱلْوَٰلِدَانِ
وَٱلْأَقْرَبُونَ مِمَّا قَلَّ مِنْهُ أَوْ كَثُرَ ۚ نَصِيبًا مَّفْرُوضًا ﴿٧﴾ وَإِذَا

حَضَرَ ٱلْقِسْمَةَ أُوْلُواْ ٱلْقُرْبَىٰ وَٱلْيَتَٰمَىٰ وَٱلْمَسَٰكِينُ فَٱرْزُقُوهُم
مِّنْهُ وَقُولُواْ لَهُمْ قَوْلًا مَّعْرُوفًا ﴿٨﴾ وَلْيَخْشَ ٱلَّذِينَ لَوْ تَرَكُواْ
مِنْ خَلْفِهِمْ ذُرِّيَّةً ضِعَٰفًا خَافُواْ عَلَيْهِمْ فَلْيَتَّقُواْ ٱللَّهَ
وَلْيَقُولُواْ قَوْلًا سَدِيدًا ﴿٩﴾ إِنَّ ٱلَّذِينَ يَأْكُلُونَ أَمْوَٰلَ ٱلْيَتَٰمَىٰ
ظُلْمًا إِنَّمَا يَأْكُلُونَ فِى بُطُونِهِمْ نَارًا ۖ وَسَيَصْلَوْنَ سَعِيرًا ﴿١٠﴾

Theme	
Creation of mankind. Property of the orphans. Restrictions on number of wives. Obligation of dowry. Do not entrust property to feebleminded people. Train the orphans to manage their properties. Laws of inheritance.	नौअ-ए-इंसानी की तख़्लीक़। यतीमों के अमवाल। बीवियों की तादाद पर पाबंदी। महर की अदायगी की फ़र्ज़ियत। नासमझ लोगों के सुपुर्द माल न करो। यतीमों को अपने अमवाल का इंतिज़ाम करने की तरबियत दो। विरासत के अहकाम।
Tarjumani	
O mankind! Have fear of your Rabb, the One who created you from a single soul, from that soul He created its mate, and through them He spread countless men and women. Fear Allah, the One in whose name you demand your rights from one another and the ties of relation-ship; surely, Allah is watching you very closely. Give orphans the property which belongs to them when they are able to handle it themselves and do not substitute your worthless things for their valuable ones; and do not cheat them of their possession through mixing it	लोगो, अपने रब से डरो जिसने तुमको एक जान से पैदा किया और उसी जान से उसका जोड़ा बनाया और उन दोनों से बहुत मर्द व औरत दुनिया में फैला दिए	उस ख़ुदा से डरो जिसका वास्ता देकर तुम एक-दूसरे से अपने हक़ माँगते हो, और रिश्ते व क़राबत के ताल्लुकात को बिगाड़ने से परहेज़ करो	यकीन जानो कि अल्लाह तुमपर निगरानी कर रहा है	यतीमों के माल उनको वापस दो, अच्छे माल को बुरे माल से न बदल लो, और उनके माल अपने माल के साथ मिलाकर न खा जाओ, यह बहुत बड़ा गुनाह है	और अगर तुमको अंदेशा हो कि यतीमों के साथ इनसाफ़ न कर सकोगे तो जो औरतें तुमको पसंद आएँ उनमें से दो-दो, तीन-

up with your own. For this would indeed be a great sin. If you fear that you shall not be able to treat the orphans with fairness, then marry other women of your choice: two, three or four. But if you fear that you will not be able to maintain justice between your wives, then marry only one or any slave girl you may own. That will be more suitable, so that you may not deviate from the Right Way. Give the women (whom you marry) their dowries willingly as an obligation; but if they, by their own free will, give up to you a portion of it then you may enjoy it with pleasure. Do not entrust your property which Allah has made a means of support for you, to feebleminded people, however, provide such people with food and clothing, speak to them nicely and give them good advice. Observe the orphans through testing their abilities until they reach the age of marriage, then if you find them capable of sound judgment, hand over to them their property; and do not consume it wastefully in haste lest they grow up to demand it. If the guardian is well-off, he should not take compensation from the orphan's property, but if he is poor let him take a just and reasonable remuneration. When you hand over their property to them, call in some	तीन, चार-चार से निकाह कर लो	लेकिन अगर तुम्हें अंदेशा हो कि उनके साथ अद्ल न कर सकोगे तो फिर एक ही बीवी करो या उन औरतों को जौजियत में लाओ जो तुम्हारे कब्ज़े में आई है, बेइनसाफ़ी से बचने के लिए यह ज़्यादा क़रीने-सवाब है	और औरतों के महर खुशदिली के साथ (फ़र्ज़ जानते हुए) अदा करो, अलबत्ता अगर वे ख़ुद अपनी ख़ुशी से महर का कोई हिस्सा तुम्हें माफ़ कर दें तो उसे तुम मज़े से खा सकते हो	और अपने वे माल, जिन्हें अल्लाह ने तुम्हारे लिए कियामे-ज़िन्दगी का ज़रीआ बनाया है, नादान लोगों के हवाले न करो, अलबत्ता उन्हें खाने और पहनने के लिए दो और उन्हें नेक हिदायत करो	और यतीमों की आज़माइश करते रहो यहाँ तक कि वे निकाह के काबिल उम्र को पहुँच जाएँ	फिर अगर तुम उनके अन्दर अहलियत पाओ तो उनके माल उनके हवाले कर दो	ऐसा कभी न करना कि हद्दे-इनसाफ़ से तजावुज़ करके इस खौफ़ से उनके माल जल्दी-जल्दी खा जाओ कि वे बड़े होकर अपने हक़ का मुतालबा करेंगे	यतीम का जो सरपरस्त मालदार हो वह परहेज़गारी से काम ले और जो ग़रीब हो वह मारुफ़ तरीक़े से खाए	फिर जब उनके माल उनके हवाले करने लगो तो लोगों को उसपर गवाह बना लो, और हिसाब लेने के लिए अल्लाह काफ़ी है	मर्दों के लिए उस माल में हिस्सा है जो माँ-बाप और क़रीबी रिश्तेदारों ने छोड़ा हो, और औरतों के लिए भी उस माल में हिस्सा है जो माँ-बाप और क़रीबी रिश्तेदारों ने छोड़ा हो, खाह थोड़ा हो या बहुत, और यह हिस्सा (अल्लाह की तरफ़ से) मुकर्रर है	और जब

witnesses, even though Allah is sufficient in taking the accountability. Men will have a share in what their parents and their near relatives leave; and women will have a share in what their parents and their near relatives leave: whether it be a small or large, they shall be legally entitled to their shares. If the relatives, orphans or needy are present at the time of the division of an inheritance, give them something out of it, and speak to them kind words. Let those (executors and guardians) have the same fear in their minds as they would have for their own if they were to leave helpless children behind: they should, therefore, fear Allah and speak for justice. In fact, those who misappropriate the property of orphans unjustly, swallow but fire into their bellies; they will soon be cast into the blazing fire!	तकसीम के मौक़े पर कुंबे के लोग और यतीम और मिस्कीन आएँ तो उस माल में से उनको भी कुछ दो और उनके साथ भले मानसों की-सी बात करो	लोगों को इस बात का ख़याल करके डरना चाहिए कि अगर वे ख़ुद अपने पीछे बेबस औलाद छोड़ते तो मरते वक़्त उन्हें अपने बच्चों के हक़ में कैसे कुछ अंदेशे लाहिक होते	पस चाहिए कि वे ख़ुदा का खौफ़ करें और रास्ती की बात करें	जो लोग ज़ुल्म के साथ यतीमों के माल खाते हैं दरहकीकत वे अपने पेट आग से भरते हैं और वे ज़रूर ज़हन्नम की भड़कती हुई आज में झोंके जाएँगे	
Tafsir	